INDEX

पहला पाठ _____	2.
दूसरा पाठ _____	3.
तीसरा पाठ _____	6.
चौथा पाठ _____	8.
पाचवा पाठ _____	10.
छटा पाठ _____	15.
सातवा पाठ _____	18.
आठवा पाठ _____	23.
नौवा पाठ _____	25.
10वा पाठ _____	27.
11वा पाठ _____	28.
12वा पाठ _____	30.
13वा पाठ _____	32.
14वा पाठ _____	33.
15वा पाठ _____	36.
16वा पाठ _____	38.
17वा पाठ _____	40.
18वा पाठ _____	42.
19वा पाठ _____	44.
20वा पाठ _____	45.
21वा पाठ _____	46.
22वा पाठ _____	48.
23वा पाठ _____	49.
24वा पाठ _____	53.
25वा पाठ _____	55.

पाठ 1

अजीव के दो प्रकार हैं

1. जीव का प्रतिपक्षी तत्व क्या है?

Ans. अजीव

2. संसार के मूल तत्व कितने हैं?

Ans. संसार में मूल तत्व दो हैं - जीव, अजीव

3. अजीव तत्व से क्या तात्पर्य है?

Ans. जिसमें चैतन्य गुण का सर्वथा अभाव है। जो जड़ पदार्थ है।

4. अजीव तत्व के मूल कितने भेद हैं?

Ans. अजीव तत्व के मूल दो भेद हैं। रूपी - अरूपी।

5. रूपी अरूपी के पर्यायवाची शब्द बताए?

Ans. रूपी-- मूर्त (रूपवान)

अरूपी --- अमूर्त (जिसका कोई रूप न हो)

6. अरूपी तत्व की परिभाषा क्या है?

Ans. अरूपी पदार्थ का कोई आकार नहीं होता उसमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श भी नहीं होते। न आंखों से देखा जा सकता है, न सूँघा जा सकता है, न चखा जा सकता है और न छूकर उसका अनुभव किया जा सकता है

7. रूपी का अर्थ क्या है? परिभाषा लिखे।

Ans. रूपी का अर्थ है रूपवान। जिसमें वर्ण, गंध, रस, स्पर्श हो वह रूपी है।

8. अरूपी अजीव तत्व के कितने प्रकार हैं नाम बताए?

Ans. अरूपी अजीव के चार प्रकार हैं:- धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल

9. धर्म से क्या तात्पर्य है?

Ans. 'गति सहायो धर्म' गतिशील जीव और पुद्गलों की गति में उदासीन भाव से सहयोग बनने वाला तत्त्व धर्म है।

10. अस्तिकाय का अर्थ क्या है?

Ans. अस्ति का अर्थ है त्रैकालिक पदार्थ और काय का अर्थ है प्रदेश- समूह।

11. धर्मास्तिकाय क्या है?

Ans. गति में सहायता करने वाला प्रदेश-समूह धर्मास्तिकाय है।

12. अधर्मास्तिकाय से क्या तात्पर्य है?

Ans. 'स्थितिसहायो धर्मः' स्थिति में सहायता करने वाला प्रदेश समूह अधर्मास्तिकाय है।

13. आकाशास्तिकाय से क्या तात्पर्य है?

Ans. 'अवगाहलक्षणं आकाशः' सब पदार्थों का आश्रय देने वाला प्रदेश- समूह आकाशास्तिकाय है।

14. काल से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो तत्त्व पदार्थ के परिवर्तन का हेतु हूं, वह काल है।

पाठ 2

पुद्गल के पांच संस्थान हैं

1. संस्थान का अर्थ क्या है?

Ans. संस्थान का अर्थ है आकार। आकृति, शरीर के अवयवों अथवा परमाणु - पुद्गलों की रचना।

2. संस्थान किसके होता है?

Ans. जीव का आकार नहीं होता है, इसलिए उसमें कोई संस्थान भी नहीं होता। किन्तु अजीव का आकार होता है, इसलिए अजीव के संस्थान होता है।

3. अजीव के कितने भेद हैं?

Ans. अजीव के पांच भेद हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और काल

4. कितने अजीव अरूपी हैं?

Ans. चार अजीव अरूपी हैं, धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल

5. अजीव में रूपी कौन?

Ans. अजीव में रूपी पुद्गलास्तिकाय हैं।

6. सामान्य: संस्थान के कितने प्रकार हैं, नाम बताए?

Ans. सामान्यता संस्थान दो प्रकार की हैं। इत्थंस्थ और अनित्थंस्थ

7. अनित्थंस्थ का अर्थ क्या है, कितने भेद हैं?

Ans. अनित्थंस्थ का अर्थ है अनियत आकार। कोई नियत आकार ना होने के कारण इसके भेदों का निर्धारण नहीं हो सकता।

8. इत्थंस्थ का अर्थ क्या है कितने भेद हैं?

Ans. इत्थंस्थ का अर्थ है निश्चित आकार। इसके पांच भेद। वृत्त, परिमंडल परिमंडल, त्रिकोण, चतुष्कोण, आयत।

9. गोलाकार पदार्थ के वाचक कौन से संस्थान के हैं?

Ans. इनमें वृत्त और परिमंडल संस्थान गोलाकार पदार्थ के वाचक हैं।

10. वृत्त आकार किस उदाहरण द्वारा समझाया जाता है?

Ans. वृत्त आकाश समझाने के लिए मोदक या गेंद का उदाहरण दिया जाता है। ये सघन (ठोस पदार्थ) सतल होते हैं।

11. परिमंडल आकार किस उदाहरण द्वारा समझाया जाता है?

Ans. परिमंडल संस्थान का उदाहरण है चूड़ी। चूड़ी गोलाकार होने पर भी मोदक की भांति सघन और सतल नहीं होती।

12. त्रिकोण संस्थान को किसकी उपमा दी गई है?

Ans. त्रिकोण संस्थान को सिंघाड़े के आकार से उपमित किया जाता है।

13. चतुष्कोण संस्थान से क्या तात्पर्य है?

Ans. चतुष्कोण संस्थान में वे सब वस्तुएं आ जाती हैं, जो चौकोर होती हैं।

14. आयत संस्थान से क्या तात्पर्य है?

Ans. आयत संस्थान पदार्थ की लंबाई की सूचना देने वाला है। जिसको जैन शास्त्रों में पृथुल कहते हैं। उसका अर्थ है विस्तीर्ण। वैसे आयत शब्द लंबा और विस्तृत इन दोनों अर्थों का बोधक है।

15. पांचों संस्थान किस में होते हैं।

Ans. पांचों संस्थान पुद्गल में ही होते हैं। अन्य किसी भी पदार्थ में नहीं होते।

पाठ 3

जीव के प्रयोग में आने वाले पुद्गल स्कन्धों का आठ वर्गण

1. पुद्गल के कितने रूप हैं?

Ans. पुद्गल के दो रूप हैं परमाणु और स्कन्ध।

2. पुद्गल द्रव्य की दृष्टि से कितने हैं?

Ans. पुद्गल द्रव्य की दृष्टि से अनंत हैं।

3. क्षेत्र का सीमांकन किया जाए तो पुद्गल कहां-कहां है?

Ans. क्षेत्र का सीमांकन किया जाए तो वह संपूर्ण लोक में हैं।

4. पुद्गल रूपी क्यों है?

Ans. भाव की दृष्टि से वह वर्ण गंध, रस और स्पर्श युक्त होने के कारण रूपी हैं।

5. पुद्गल का गुण क्या है?

Ans. पुद्गल का गुण है ग्रहण। ग्रहण अर्थात् मिलन और बिखराव।

6. पुद्गल का सबसे छोटा व सबसे बड़ा रूप कौन सा है?

Ans. "परमाणु" पुद्गल का सबसे छोटा रूप है और अचित्त महास्कन्ध उसका सबसे बड़ा रूप है।

(अचित्त महास्कन्ध अर्थात् अन्य अनित्थंस्थ परिमंडल आदि 5 संस्थानों से अतिरिक्त इस स्कन्धों का निर्माण करती है।)

7. संस्थान और स्कन्ध में क्या अंतर है?

Ans. संस्थान का आकार नियत होता है और स्कन्ध अनियत आकार वाले होते हैं।

8. वर्गणा किसे कहते हैं?

Ans. पुद्गल हमारे लिए बहुत उपयोगी चीज है, पर बहुत से पुद्गल ऐसे भी हैं जिन्हें हम काम में नहीं ले सकते। परमाणु ही नहीं, ऐसे अनंत अनंत प्रदेशी स्कन्ध भी हैं जिनका हमारे लिए सीधा कोई उपयोग नहीं है। जो पुद्गल स्कन्ध हमारे काम में आते हैं उन्हें वर्गणा कहा जाता है।

9. वर्गणा का अर्थ क्या है?

Ans. सजातीय पुद्गलों का समूह।

10. वर्गणाएं कितने प्रकार की होती हैं नाम बताएं?

Ans. वर्गणा आठ प्रकार की होती हैं। औदारिक वर्गणा, वैक्रिय वर्गणा, आहारक वर्गणा तैजस वर्गणा कार्मण वर्गणा मनोवर्गणा वचन वर्गणा श्वासोच्छ्वास वर्गणा।

11. औदारिक वर्गणा से क्या तात्पर्य है?

Ans. औदारिक शरीर के रूप में प्रयुक्त होने वाले सजातीय पुद्गल का नाम औदारिक वर्गणा है।

12. वैक्रिय वर्गणा से क्या तात्पर्य है?

Ans. वैक्रिय शरीर के रूप में प्रयुक्त होने वाले सजातीय पुद्गल समूह का नाम वैक्रिय वर्गणा है।

नोट इसी प्रकार बाकी छः वर्गणाओं का वर्णन है

13. आठों वर्गणाओं में सबसे स्थूल वह सबसे सूक्ष्म वर्गणा कौन सी है?

Ans. सबसे स्थूल वर्गणा औदारिक और सबसे सूक्ष्म वर्गणा कार्मण है।

14. संख्या की दृष्टि से कौन सी परमाणु वर्गणा सबसे अधिक होती है?

Ans. संख्या की दृष्टि से सूक्ष्म वर्गणा अधिक होती है।

15. सब वर्गणाएं परमाणु है या स्कन्ध?

Ans. सब वर्गणाएं अनन्त- प्रदेशी स्कन्ध है

16. कौनसी वर्गणाएं अष्टस्पर्शी हैं?

Ans. पांच वर्गणाएं अष्टस्पर्शी हैं। औदारिक वर्गणा, वैक्रिय वर्गणा, तैजस वर्गणा, आहारक वर्गणा और श्वासोच्छ्वास वर्गणा।

17. वर्गणाओं का महत्व क्या है?

Ans. संसार का कोई भी प्राणी इन वर्गणाओं में से अपने-अपने योग्य वर्गणाओं के योग बिना अपना काम नहीं कर सकता वह हर क्षण नई वर्गणा का स्वीकार, परिणमन और विसर्जन करता रहता है।

पाठ 4

पुद्गल के चार लक्षण

1. लक्षण का अर्थ क्या है?

Ans. लक्षण यानी पहचान

2. 'लक्ष्यन्ते परिचीयन्ते पुद्गलः यैस्तानि लक्षणानि' इसका अर्थ लिखें।

Ans. पुद्गल की पहचान के जो हेतु हैं वही उसके लक्षण हैं।

3. पुद्गल का शाब्दिक अर्थ क्या है?

Ans. जिसमें पूरण एकीभाव और गलन पृथगभाव होता है वह पुद्गल है।

4. मुद्गल का स्वरूप क्या है?

Ans. जो द्रव्य स्पर्श, रस, गंध, और वर्ण युक्त होता है वह पुद्गल का स्वरूप है।

5. पुद्गल की परिभाषा में शब्द को क्यों छोड़ा गया है?

Ans. शब्द मुद्गल का एकांतिक लक्षण नहीं है। शब्द के बिना पुद्गल रह सकता है। शब्द पुद्गल ही है पर पुद्गल शब्दात्मक ही हो आवश्यक नहीं है जबकि स्पर्श, रस, गंध और वर्ण के बिना पुद्गल का कोई अस्तित्व नहीं रहता।

6. संसार में कितने प्रकार के पदार्थ होते हैं?

Ans. संसार में मूलतः दो प्रकार के ही पदार्थ होते हैं मूर्त और अमूर्त।

7. अमूर्त से क्या तात्पर्य है?

Ans. अमूर्त यानी अरूपी जिसका कोई रूप नहीं होता। अमूर्त पदार्थ में स्पर्श, रस, गंध और वर्ण नहीं होते इसीलिए पौद्गली नहीं होते।

8. पुद्गल के चारों लक्षण के कितने भेद हैं?

Ans. चारों लक्षण के बीस भेद हैं। स्पर्श के आठ हैं, रस के पांच हैं, गंध के दो हैं और वर्ण के पांच हैं।

9. क्या प्रत्येक पुद्गलों में सारे भेद एक समान पाए जाते हैं?

Ans. नहीं। प्रत्येक पुद्गल में यह सभी तत्व हो जरूरी नहीं है। जैसे सबसे छोटा पुद्गल होता है परमाणु। पुद्गल उसमें एक रस, एक गंध, एक वर्ण और स्पर्श दो होते हैं।

10. अनंतानंत प्रदेशी स्थूल स्कन्ध में कितने तत्व होते हैं?

Ans. आठ स्पर्श, पांच रस, दो गंध और पांच वर्ण।

पाठ 5

इंद्रियों के 23 विषय हैं

A. इन्द्रिय की परिभाषा क्या है?

Ans. चेतना के विकास का प्राथमिक स्तर, प्रतिनियत और वर्तमान अर्थ को ग्रहण करने वाली चेतना।

1. इंद्रिय से क्या तात्पर्य है?

Ans. इंद्रिय ज्ञान करने का साधन है। इसीलिए यह ग्राहक है।

2. इंद्रियों के विषय से क्या तात्पर्य है?

Ans. इंद्रिय के ग्रह्य तत्व विषय कहलाते हैं। इंद्रिय पांच हैं और इसके मूल विषय भी पांच हैं शब्द, रूप, गंध और स्पर्श एक- एक विषय का विस्तार किया जाए तो इसकी संख्या 23 हो जाती है।

3. इंद्रियों के 23 विषय कौन-कौन से हैं?

Ans. पांच इंद्रियों के 23 विषय।

- श्रोत्र इन्द्रिय के तीन विषय:-
- जीव शब्द, अजीव शब्द और मिश्र शब्द
- चक्षु इन्द्रिय के पांच विषय:-
- कृष्ण, नील, रक्त पीत, श्वेत
- प्राण (घ्राण) इंद्रिय के दो विषय
- सुगंध और दुर्गंध
- रसन इंद्रियों के पांच विषय हैं:-
- तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल और मधुर
- स्पर्श इंद्रिय के आठ विषय:-
- शीत, उष्ण, स्निग्ध, रुक्ष, कर्कश, मधु, गुरु, लघु

4. श्रोत्र इंद्रिय का विषय क्या है?

Ans. श्रोत्र इंद्रिय का विशेष शब्द है।

5. शब्द से क्या तात्पर्य है?

Ans. शब्द को दो अर्थों द्वारा समझा जा सकता है। सापेक्ष और निरपेक्ष। सापेक्ष यानी स्थूल रूप से जाना जा सकता है, बताया या समझाया जा सकता है, जैसे जो बोला जा सकता है शब्द है, जो ध्वनित होता है वह शब्द है, यह सापेक्ष परिभाषा है। निरपेक्ष यानी की सूक्ष्मता से जानना। निरपेक्ष प्रतिपादन से किसी भी तत्व को सरलता से नहीं समझा जा सकता। इसलिए तत्व बोध की दिशा में सापेक्षता के मूल्य को नकारा नहीं जा सकता।

5. व्याकरण ग्रंथों में जीव शब्द के किन उत्पत्ति स्थानों का उल्लेख है?

Ans. हृदय, कंठ, शिर जिह्वामूल, दांत नासिका, होठ और तालू यह 8 स्थान हैं, जहां से शब्द की उत्पत्ति होती है इन 8 स्थानों का सीधा संबंध जीव से है इसीलिए इनसे उत्पन्न होने वाला शब्द जीव शब्द कहलाते हैं।

6. अजीव शब्द से क्या तात्पर्य है?

Ans. पुद्गलो के संघर्षण से जो ध्वनि होती है वह अजीव शब्द है। जैसे वीणा, झालर, ताल, कांस्य आदि के शब्द अजीव हैं। खटखट करना, चुटकी बजाना, पांव पटकना आदि क्रियाओं से जो शब्द होता है वह भी अजीव शब्द है।

7. मिश्र शब्द से क्या तात्पर्य है?

Ans. उपर्युक्त आठ स्थानों और वादों का योग होने पर जो शब्द निकलता है, वह मिश्र, शब्द है जैसे बांसुरी बजाना।

8. शब्द का उपयोग क्या है?

Ans. शब्द का अर्थ दो प्रकार से होता है सार्थक और निरर्थक। जिन शब्दों का कोई अर्थ भी नहीं होता और उपयोग भी नहीं होता वह निरर्थक हैं। जो शब्द

चाहे शब्दात्मक हो या ध्वन्यात्मक हो जो प्राणी जगत की भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हैं वह सार्थक हैं। क्योंकि समूह चेतना में एक दूसरे को समझने के लिए शब्द ही एक सशक्त माध्यम बनता है।

9. संसारी जीवों में शब्दों का महत्व कब तक है?

Ans. जब तक अतीन्द्रिय ज्ञान उपलब्ध ना हो जाए, विकसित चेतना वाले प्राणी अपने भावों को शब्द के रथ पर आरूढ़ करके ही समूचे व्यवहार का संचालन करते हैं।

10. चक्षु इंद्रिय का विषय क्या है?

Ans. चक्षु इंद्रिय का विषय वर्ण है वर्ण यानी रंग।

11. वर्ण कितने प्रकार के हैं?

Ans. वह पांच प्रकार के हैं कृष्ण नील, रक्त, पीत और श्वेत।

12. क्या इन 5 वर्ण के अतिरिक्त भी कोई वर्ण है?

Ans. इन पांच रंगों के सहयोग से अनेक नए रंग उत्पन्न हो सकते हैं। उन संयोगजन्य रंगों की संख्या का कोई निर्धारण संख्या नहीं है। मूल में पांच ही वर्ण हैं।

13. पुद्गल की प्रमाणिकता में वर्ण का क्या महत्व है?

Ans. 'परमाणु' पुद्गल की सबसे छोटी इकाई है। वह दृश्य होने पर हम उसे इन चर्मचक्षुओं से देख नहीं सकते। उस परमाणु में भी कम से कम एक वर्ण की उपस्थिति निश्चित रूप से रहती है। वर्ण के अभाव में पौद्गलिकता की प्रमाणिकता नहीं हो सकती है।

14. घ्राण इंद्रिय का विषय क्या है?

Ans. घ्राण इंद्रिय का विषय गंध है।

15. गंध के कितने प्रकार हैं?

Ans. गंध के दो प्रकार हैं: - सुगंध और दुर्गंध

16. मनोज परिमल किसे कहा गया है?

Ans. सुगंध को मनोज परिमल कहा गया है।

17. अमनोज परिमाण किसे कहा गया है?

Ans. दुर्गंध को अमनोज परिमल

18. कौन सी गंध मनोज होती है और कौन सी अमनोज?

कहा गया है।

Ans. मनोज यानी मन को पसंद हो। मन के योग्य हो। और अमनोज यानी मन की पसंद ना हो, मन के योग्य न हो। इसके लिए कोई निश्चित मर्यादा नहीं है। क्योंकि एक की पसंद दूसरे की नापसंद हो सकती है। किसी की नापसंद दूसरे की पसंद हो सकती है। जैसे चर्मकार चमड़े के जूते बनाता है, वह दिन-रात चमड़े के बीच में रहता है, चमड़े की गंध उसे दुर्गंध नहीं लगती। लेकिन दूसरे किसी का वहां से गुजरने मात्र से वह गंध असह्य हो जाते हैं।

19. सुगंध और दुर्गंध का वर्गीकरण थीर नहीं है। फिर कौन सी चीजों को दो प्रकार की गंध में बांटा है?

Ans. कोष्ठापुट चूर्ण को सुगंध और मृतक शरीर को दुर्गंध के रूप में प्रस्तुत किया है।

20. रसना का विषय क्या है?

Ans. रसना का विषय है रस।

21. रस के कितने प्रकार हैं?

Ans. रस के पांच प्रकार हैं- तिक्त, कटु, कषाय, अम्ल और मधुर।

23. रसों का ग्रहण कौन करता है?

Ans. रसों का ग्रहण रसना (जिहवा) करती है। इसलिए इन्हें रस इंद्रिय के विषय के रूप में स्वीकार किया गया है।

24. रसों को उदाहरण द्वारा समझाएं?

Ans. सौंठ का स्वाद तिक्त होता है।

- नीम का रस कटु होता है।
- हरीतकी का रस कसैला होता है।
- इमली का रस अम्ल(खट्टा) होता है
- चीनी का स्वाद मधुर होता है।

25. संसार में किन प्राणियों के रसनेंद्रिय होती है?

Ans. पांच स्थावर को छोड़कर सभी में होती है।

26. स्पर्शन का विषय क्या है?

Ans. स्पर्श

27. स्पर्श के कितने प्रकार हैं?

Ans. स्पर्श के आठ प्रकार हैं:- शीत, उष्ण, स्निग्ध, रूक्ष, कर्कश, मृदु, गुरु और लघु

28. स्पर्श के आठ प्रकार को समझाएं?

Ans. प्रथम चार स्पर्श मूल के हैं। शेष चार स्पर्श सापेक्ष (अपेक्षा सहित) हैं। प्रथम चार की बहुलता और न्यूनता के आधार पर अन्तिम चार स्पर्श बनते हैं।

(शीत - ठंडा, उष्ण- गर्म, स्निग्ध- चिकना, रूक्ष- रूखा, कर्कश- खरदरा, मृदु- कोमल, गुरु - भारी, लघु- हल्का)

29. लघु स्पर्श का अनुभव कब होता है?

Ans. जब रूक्ष स्पर्श की बहुलता होती है।

30. गरु स्पर्श का अनुभव कब होता है?

Ans. जब स्निग्ध स्पर्श की बहुलता होती है।

31. मृदु स्पर्श का अनुभव कब होता है?

Ans. जब स्निग्ध और उष्ण स्पर्श की बहुलता होती है।

32. कर्कश स्पर्श का अनुभव कब होता है?

Ans. जब शीत और रूक्ष स्पर्श की बहुलता होती है।

पाठ 6

कर्म के आठ प्रकार हैं

1. कर्म क्या है?

Ans. प्राणी की अपनी शुभ और अशुभ प्रवृत्ति के द्वारा आकृष्ट पुद्गल स्कन्ध (कर्म वर्गणा) उसका जो आत्मा के साथ एकीभूत हो जाता है, कर्म कहलाता है।

2. कार्मण वर्गणा से क्या तात्पर्य है?

Ans. यह वर्गणा कार्मण शरीर के रूप में परिणत होती है। इसका संबंध कर्म से है।

3. कर्म मूलतः एक ही प्रकार का है। फिर यह आठ प्रकार किस आधार पर बतलाए गए हैं।

Ans. यह विभाग कर्मों के कार्य की अपेक्षा से है।

4. आठ कर्म कौन-कौन से हैं?

Ans. ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीया, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय।

5. आत्मा की ज्ञान चेतना को आवृत करने वाला कर्म कौन सा है?

Ans. आत्मा की ज्ञान चेतना को आवृत करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म है।

6. आत्मा की दर्शन चेतना को आवृत करने वाला कौन सा कर्म है ?

Ans. दर्शनावरणीय कर्म

7. सुख और दुःख की अनुभूति में हेतुभूत बनने वाला कौन सा कर्म है?

Ans. वेदनीय कर्म।

8. चेतना को विकृत या मूर्छित करने वाला कौन सा कर्म है?

Ans. मोहनीय कर्म

9. किसी एक गति में निश्चित अवधि तक बांध कर रखने वाला कौन सा कर्म है?

Ans. आयुष्य कर्म

10. शरीर -संरचना की प्रकृष्टता या निकृष्टता का कारण कौन सा कर्म है?

Ans. नाम कर्म ।

11. जीव को अच्छी या बुरी दृष्टि से देखे जाने में निमित्त कौन सा कर्म है?

Ans. गोत्र कर्म।

12. आत्मशक्ति की उपलब्धि में बाधा पहुंचाने वाला कौन सा कर्म है?

Ans. अंतराय कर्म

13. प्राणी संसार में कब तक परिभ्रमण करता है?

Ans. जब तक यह कर्म आत्मा के साथ एकीभूत रहेंगे तब तक प्राणी को संसार में परिभ्रमण करना पड़ेगा।

14. आत्मा अपने स्वरूप में कब अवस्थित हो जाती है?

Ans. कर्मों के बंधन से छूटते ही आत्मा मुक्त हो जाती है। तब आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित हो जाती है।

15. आठ कर्मों में कितने और कौनसे कर्म एकांत अशुभ हैं?

Ans. आठ कर्मों में चार कर्म एकांत अशुभ हैं ज्ञानावरणीय, दर्शनावणीय, मोहनीया और अंतराय।

16. आठ कर्मों में कितने व कौन से कर्म शुभ - अशुभ दोनों होते हैं?

Ans. आठ कर्मों में चार का शुभ - अशुभ दोनों होते हैं। वेदनीय, आयुष्य, नाम और गोत्र।

17. घनघात्य कर्म किसे कहते हैं?

Ans. ज्ञानावरणीय आदि एकांत अशुभ कर्मों को घनघात्य कर्म कहते हैं।

18. घाती कर्म से क्या तात्पर्य है?

Ans. आत्मा के मौलिक गुणों की घात करने वाले कर्म घात्य या घाती कर्म कहलाते हैं।

19. घनघात्य से क्या तात्पर्य है?

Ans. सघन प्रयत्न द्वारा ही इन कर्मों की घात हो सकती है। इसीलिए इन्हें घनघात्य कर्म कहा जाता है।

20. भवोपग्राही कर्म किसे कहा है और क्यों?

Ans. आत्म गुणों की घात ना करने पर भी जीव के भव भ्रमण में इनका पूरा पूरा सहयोग रहता है। इस दृष्टि से इन्हें भवोपग्राही कर्म कहा जाता है।

21. वह कौन से कर्म है, जिन्से मुक्त हुए बिना केवली या तीर्थकर को संसार में रहना पड़ता है?

Ans. भवोपग्राही कर्म।

22. मोहनीय कर्म कौन से गुणस्थान तक रहता है?

Ans. ग्यारहवें गुणस्थान तक।

23. कौन से कर्मों का अस्तित्व बारहवें गुणस्थान तक है?

Ans. ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय और अंतराय।

24. भवोपग्राही कर्म कौनसे गुणस्थान तक बने रहते हैं?

Ans. भवोपग्राही कर्म चौदहवें गुणस्थान के अंतिम समय तक बने रहते हैं। चार अघात्य कर्मों को क्षीण करना और मुक्त होना यह सब काम एक साथ एक समय में घटित हो जाते हैं।

पाठ 7

कर्म की इकतीस उत्तर. प्रकृतियां

1. कर्म की मूल प्रकृतियां कौन-कौन सी हैं?

Ans. कर्म की मूल प्रकृतियां आठ हैं ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अंतराय

2. कर्म की Ans. प्रकृतियां कितनी हैं?

Ans. कर्म की उत्तर प्रकृति या 31 हैं -:

- ज्ञानावरणीय की पांच
- दर्शनावरणीय की नौ
- वेदनीय की दो

- मोहनीय की दो
- आयुष्य की चार
- नाम की दो
- गोत्र की दो
- अन्तराय की पांच

3. ज्ञानावरणीय कर्म की 5 प्रकृतियां कौन सी हैं?

Ans. मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनः पर्यवज्ञानावरण और केवलज्ञानावरण

4. ज्ञानावरणीय कर्म की पांच प्रकृतियां किस आधार पर बताई हैं?

Ans. ज्ञान के पांच भेद हैं, उसी के आधार पर ज्ञानावरणीय कर्म के पांच भेद बताए हैं।

5. ज्ञानावरणीय का अर्थ क्या है?

Ans. जिसके द्वारा जाना जाता है वह ज्ञान है। जैसे वस्त्र सूर्य के प्रकाश को आवृत करता है, वैसे ही जो पुद्गल स्कंध ज्ञान को आवृत करता है वह ज्ञानावरणीय कर्म है।

6. दर्शनावरण का अर्थ क्या है?

Ans. जिसके द्वारा देखा जाता है वह दर्शन है। यह सामान्य अवबोध है। जैसे द्वारपाल राजा के दर्शन में बाधा डालता है, वैसे ही जो पुद्गल स्कंध दर्शन को आवृत करता है, वह दर्शनावरण कर्म है। यानी साक्षात्कार में बाधा।

7. दर्शनावरण कर्म की नौ उत्तर प्रकृतियां कौन सी हैं?

Ans. चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण, केवलदर्शनावरण, निद्रा निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला और सत्यानर्द्धि ।

8. दर्शन चार ही है, तो दर्शनावरणीय कर्म की नौ प्रकृतियां किस आधार पर की गई है?

Ans. जिस प्रकार चशुदर्शनावरण अचक्षुदर्शनावरण आदि के उदय से इंद्रियों द्वारा होने वाले विषय के साक्षात्कार में बाधा उपस्थित होती है, उसी प्रकार निंद्रा आदि पांच प्रकृतियों के उदय से भी साक्षात्कार में बाधा पहुंचती है इसीलिए दर्शनावरणीय कर्म की नौ प्रकृतियां बताई गई है।

9. निंद्रा प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो नींद सहजता से टूट जाए ।

10. प्रचला प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

Ans. प्रचला - जो बैठे-बैठे नींद आती है।

11. निंद्रानिंद्रा प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

Ans. निंद्रानिंद्रा -जो कठिनाई से नींद टूटे।

12. प्रचलाप्रचला प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

Ans. प्रचलाप्रचला - जो चलते -चलते नींद आती है।

13. सत्यानर्द्धि प्रकृति से क्या तात्पर्य है?

Ans. यह अशुभ अनुभव वाली हैं ।इस नींद में व्यक्ति कुछ भी कर लेता है ।पर उसे उसका भान नहीं होता ।नींद में क्रूर से क्रूर प्रवृत्ति कर लेता है, पर स्वप्न जैसा आभास होता है।

14. वेदनीय कर्म का अर्थ क्या है?

Ans. जो पुद्गल सुख और दुःख दोनों के संवेदन में हेतुभूत बनते हैं, वह वेदनीय कर्म है।

15. वेदनीय कर्म की दो प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. साता वेदनीय, असाता वेदनीय

16. सात वेदनीय से क्या तात्पर्य है?

Ans. सात वेदनीय के उदय से शारीरिक और मानसिक सुख की अनुभूति होती है।

17. असात वेदनीय से क्या तात्पर्य है?

Ans. असात वेदनीय के उदय से मानसिक संक्लेश और शारीरिक कष्ट का अनुभव होता है।

18. मोहनीय कर्म करता हैं?

Ans. जो कर्म ज्ञान की चेतना को मूर्च्छित करता है, (दृष्टिकोण और चारित्र में विकार उत्पन्न करता है) वह मोह कर्म है।

19. मोहनीय कर्म की दो प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. दर्शन मोहनीय है और चारित्र मोहनीय

20. दर्शन मोहनीय किसका बाधक है?

Ans. दर्शन मोहनीय सम्यक्त्व का बाधक है।

21. चारित्र मोहनीय किसका बाधक है?

Ans. चारित्र मोहनीय साधुत्व का बाधक है।

22. आयुष्य कर्म की चार प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. नरक आयुष्य, तिर्यच आयुष्य, मनुष्य आयुष्य और देव आयुष्य।

23. आयुष्य कर्म का सम्पूर्ण क्षय का परिणाम क्या है?

Ans. मोक्ष

24. नाम कर्म की दो प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. शुभ नामकर्म और अशुभ नामकर्म

25. शुभ नामकर्म के उदय से क्या प्राप्त होता है?

Ans. गति, जाति, शरीर, संस्थान आदि अच्छे प्राप्त होते हैं।

26. गोत्र कर्म की दो प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. उच्च गोत्र और नीच गोत्र

27. गोत्र कर्म से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो पुद्गल स्कंध आत्मा की प्रतिष्ठा या अप्रतिष्ठा (उच्चता या नीचता की अनुभूति) में निमित्त बनता है, वह गोत्र कर्म है।

28. अन्तराय का अर्थ क्या है?

Ans. अन्तराय का अर्थ है बाधा।

29. अन्तराय कर्म की पांच प्रकृतियां कौनसी है?

Ans. दान अन्तराय, लाभ अन्तराय, भोग अन्तराय, उपभोग अन्तराय और वीर्य अन्तराय ।

30. अन्तराय कर्म से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो कर्म दान, राम, भोग, उपभोग और शक्ति के विकास में बाधक बनता है, वह अन्तराय कर्म है।

31. वीर्य की उपलब्धि और उपयोग कब संभव है?

Ans. अन्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से संभव है।

32. अन्तराय कर्म के भेद किस आधार पर किए गए हैं?

Ans. वीर्य आत्मा का गुण है। अमूर्त वीर्य को मूर्त प्रतीको से समझने की दृष्टि से भेद किए हैं।

33. दानांतराय कर्म के क्षय या क्षयोपक्षम से कौनसा गुण प्रकट होता है?

Ans. औदार्य गुण

34. वस्तु प्राप्त करने की क्षमता किस्से मिलती है?

Ans. लाभांतराय कर्म के क्षय या क्षयोपशम से मिलती है।

35. उपभोग अन्तराय कर्म के क्षय या क्षयोपक्षम से कौनसी उपलब्धि होती है?

Ans. पदार्थ के भोगोपभोग की क्षमता प्राप्त होती है।

36. अन्तराय कर्म की प्रमुख प्रकृति कौनसी है?

Ans. वीर्य अन्तराय कर्म की प्रमुख प्रकृति है।

पाठ 8

कर्म के आठ दृष्टांत

1. ज्ञानावरणीय कर्म के लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. ज्ञानावरणीय कर्म आंख की पट्टी के समान है। आंख पर पट्टी बांध लेने से दृश्य पदार्थ और आंख के मध्य आवरण आ जाता है। उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से प्राणी की ज्ञान चेतना आवृत हो जाती है। यह कर्म जानने में बाधा पहुंचाता है।

2. दर्शनावरणीय कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans..दर्शनावरणीय कर्म प्रहरी के समान है। जिस प्रकार प्रहरी की अनुमति के बिना किसी बड़े आदमी से मिलना संभव नहीं है, उसी प्रकार दर्शनावरणीय कर्म के उदय से देखने (सामान्य बोध करन) में अवरोध उपस्थित हो जाता है।

3. वेदनीय कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. वेदनीय कर्म मधुर लिपटी तलवार की धार के समान है। मधु के आस्वादन की तरह सातवेदनीय कर्म और जीभ कट जाने की तरह असातवेदनीय का संवेदन होता है।

4. मोहनीय कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. मोहनीय कर्म मद्यपान के समान है। दर्शन मोह के उदय से जीव विपरीत श्रद्धा करता है। चारित्र मोह के उदय से विषय भोगों में आसक्त बनता है, वह अपने हिताहित का विवेक खो देता है।

5. आयुष्य कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. आयुष्य कर्म बीड़ी या खोड़े के समान है। बीड़ी से बंधा हुआ व्यक्ति जैसे उसे तोड़े बिना नहीं निकल सकता उसी प्रकार आयुष्य कर्म का भोग किए बिना प्राणी एक भव से दूसरे भव में नहीं जा सकता।

6. नाम कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. नाम कर्म चित्रकार के समान है। चित्रकार अपनी कल्पना से नए नए चित्रों का निर्माण करता है। वैसे ही नाम कर्म शरीर संस्थान आदि को अनेक रूप देता है।

7. गोत्र कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है?

Ans. गोत्र कर्म कुंभकार के समान है। कुंभकार जैसे छोटे बड़े मनचाहे घड़े बनाता है, वैसे ही गोत्र कर्म के उदय से जीव उच्च - नीच बनता है।

8. अंतराय कर्म का लक्षण एवं कार्य क्या है।

Ans.. यह कर्म कोषाध्यक्ष के समान है। अधिकारी द्वारा आदेश प्राप्त होने पर भी कोषाध्यक्ष के दिए बिना वांछित वस्तु नहीं मिलती उसी प्रकार सब वस्तुएं एवं अनुकूलताएं सुलभ होने पर भी अंतराय कर्म के दूर हुए बिना उसका भोग नहीं हो सकता।

पाठ 9

कर्म की दस अवस्थाएं

1. पर्याय का अर्थ क्या है?

Ans. पूर्व अवस्था का परित्याग और नई अवस्था का स्वीकार।

2. कर्म की अवस्थाओं से क्या अभिप्राय है?

Ans. हर पदार्थ की विभिन्न अवस्थाएं होती हैं, पर्याय होते हैं। पदार्थ है तो पर्याय का होना जरूरी है, संसारी जीव कर्म सहित होते हैं और कर्म के सहयोग से विविध अवस्थाओं को प्राप्त करते हैं। हर पदार्थ की पर्याय अनंत है इस दृष्टि से कर्म की भी अनंत अवस्थाएं हैं किंतु प्रस्तुत संदर्भ में स्थूल अवस्थाओं की दृष्टि से बताया गया है।

3. कर्म की कितनी अवस्थाएं हैं?

Ans. कर्म की 10 अवस्थाएं हैं बंध, सत्ता उदय, उदीरणा, उद्वर्तन, अपवर्तन, संक्रमण, उपशम, निधत्ति, और निकाचना

4. बंध किसे कहते हैं?

Ans. आत्म प्रदेशों के साथ कर्म पुद्गलों का चिपकना बंध है। आत्मा और कर्मों के एकीभूत होने की अवस्था।

5. सत्ता किसे कहते हैं?

Ans. बंध के बाद जब तक कर्म वर्गणा आत्मा के साथ अनुबंधित रहती है, उसे सत्ता कहते हैं यानी बंध के बाद जब तक कर्म फल नहीं देता वह आत्मा के साथ संलग्न रहता है।

6. उदय किसे कहते हैं?

Ans. आत्मा के साथ एकीभूत कर्म सक्रिय हो जाता है, फलदान में प्रवृत्त हो जाता है, उस स्थिति को उदय कहते हैं।

7. उदीरणा किसे कहते हैं?

Ans. निश्चित उदय काल से पहले विशेष पुरुषार्थ का प्रयोग कर कर्मों को उदय में ले आना उदीरणा है।

8. उद्वर्तन किसे कहते हैं?

Ans. जिस कर्म की जितनी स्थिति बनी हुई है और जैसा रस है उससे किसी निमित्त से बड़ा देना उद्वर्तन कहते हैं।

9. अपवर्तन किसे कहते हैं?

Ans. कर्मों की बंधी हुई स्थिति और उसके रस को उससे कम कर देना अपवर्तन है।

10. संक्रमण का अर्थ क्या है?

Ans. संक्रमण का अर्थ है एक दूसरे में परिवर्तन। एक ही कर्म की भिन्न-भिन्न पर प्रकृतियां जब परस्पर संक्रांत हो जाती है तब उस स्थिति को संक्रमण कहा जाता है।

11. उपशम क्या है?

Ans. आठ कर्मों में सर्वाधिक सक्षम मोहनीय कर्म को दबाना - उसे अकिंचित्कर बना देना उपशम है।

12. निधत्ति क्या है?

Ans. जिन कर्म प्रकृतियों में उदीरणा व संक्रमण नहीं होता उनको निधत्ति कहते हैं।

13. निकाचना से क्या तात्पर्य है?

Ans. आत्मा और कर्म के संबंध को इतना प्रगाढ़ बना देना, जहां स्थिति आदि का न्यूनतम और अधिकतम हो ही ना सके, वह निकाचना है।

पाठ 10

कर्म के चार कार्य

1. कर्म का कार्य क्या है?

Ans. आत्मा के मूल गुणों को आच्छदित करना। जैसे बादल सूर्य के प्रकाश को हल्का कर देता है, लेकिन सूर्य के अस्तित्व को समाप्त नहीं कर सकता। वैसे ही कर्म आत्मा के गुणों को आच्छदित कर सकता है समाप्त नहीं।

2. कर्म का आत्मा पर किस रूप में असर होता है?

Ans. चार प्रकार से कर्मों का असर आत्मा पर होता है आवरण, अवरोध विकार और शुभ-अशुभ संयोग।

3. आवरण किन कर्मों को प्रभावित करता है?

Ans. आवरण कर्म आत्मा के मूल गुण ज्ञान और दर्शन को आवृत करता है। आवरण के कारण वह ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय कहलाते हैं।

4. विकार का प्रभाव क्या होता है, कौनसे कर्म प्रभावित होते हैं?

Ans. विकार आत्मा के मूल गुणों को विकृत करता है। इससे आत्मा अपने मूल स्वरूप को विकृत कर विवेक - चेतना को बैठती है। यह काम मोह कर्म का है। इससे मूढ़ता की स्थिति उत्पन्न होती है।

5. अवरोध का प्रभाव क्या है, कौनसे कर्म प्रभावित होते हैं?

Ans. अवरोध आत्मा के विकास में बाधा डालता है। इससे आयुष्य (भव स्थिति) कर्म और अन्तराय (आत्म शक्ति की उपलब्धि में बाधक) कर्म प्रभावित होते हैं।

6. शुभाशुभ संयोग का प्रभाव क्या है, कौनसे कर्म प्रभावित होते हैं?

Ans. आत्मा के शुभ- अशुभ संयोग में निमित्त बनता है। यह आत्मा गुणों को नुकसान नहीं पहुंचा सकता। देह संरचना, सम्मान प्रतिष्ठा आदि के भाव और अभाव में चार अघात्य कर्म (वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य) प्रभावित होते हैं। यह चार कर्म आत्मा के शुभ और अशुभ संयोग में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं।

पाठ 11

कर्म -बंध के चार विकल्प

1. आठों कर्मों का बंध अलग अलग होता है या एक साथ?

Ans. कम से कम एक कर्म का और अधिक से अधिक आठों कर्मों का बंध एक साथ हो सकता है।

2. कर्म बंध को समझने के लिए किसे आधार बनाया है और इसके कितने विकल्प हैं?

Ans. कर्म बंध के इस वर्गीकरण को समझने के लिए गुणस्थान को आधार बनाया है। किस गुणस्थान में कितने कर्मों का बंध होता है, इस विविक्षा से कर्म बंधन के चार विकल्प बनते हैं।

3. कौनसे गुणस्थान में एक ही कर्म का बंध होता है, वह कर्म कौन सा है?

Ans. 11वें 12वें और 13 वें गुणस्थान में वेदनीय कर्म का बंध होता है, वह भी सात वेदनीय का ही बंध होता है।

4. 11वें, 12वें और 13 वें गुणस्थानों में सात वेदनीय का बंध क्यों, असात वेदनीय का बंध क्यों नहीं होता?

Ans. क्योंकि इन गुणस्थानों में बंध योग से होता है कषाय से नहीं वह भी दो समय स्थिति वाला होता है।

5. कौनसे गुणस्थान में छह कर्मों का बंध होता है, वह कर्म कौन से हैं?

Ans. दसवें गुणस्थान में जिसका नाम सूक्ष्मसम्पराय है, वहां आयुष्य और मोह को छोड़कर बाकी छह का बंध प्रति समय होता है।

6. दसवें गुणस्थान में मोह का बंध क्यों नहीं होता है?

Ans. मोह का बंध कषाय की तीव्रता से होता है। किंतु सूक्ष्म संप्रदाय स्थान में कषाय बहुत हल्के और सूक्ष्म होते हैं, मोह कर्म की वर्गेणा को आकृष्ट करने में जितने प्रबल कषाय का योग चाहिए वह वहां नहीं रहता।

7. कौनसे गुणस्थानों में सात कर्मों का बंध होता है, और वह कौन से कर्मों का होता है?

Ans. तीसरे, आठवें, और नौवें गुणस्थान में सात कर्मों का बंध होता है, आयुष्य कर्म को छोड़कर।

8. तीसरे, आठवें, और नौवें गुणस्थानों में आयुष्य का बंध क्यों नहीं होता है?

Ans. आयुष्य कर्म एक ऐसा है जो एक जीवन में एक बार ही बनता है। एवं आगामी एक ही जीवन में भोग लिया जाता है। आयुष्य कर्म का बंधन तीसरे गुणस्थान को छोड़कर पहले से छठे गुणस्थान तक की होता है यह नियम हैं।, छट्टे में आयुष्य बंध प्रारंभ हो जाए एवं सातवां गुणस्थान आ जाए तो सात में पूर्ण हो सकता है। पर सातवें गुणस्थान में प्रारंभ नहीं होता है। तीसरा गुणस्थान, मिश्र गुणस्थान जहां विचारों की अस्थिर अवस्था है। अनिर्णीत अवस्था में आयुष्य का बंध नहीं होता। अप्रमत्त अवस्था से आगे आयुष्य का बंधन संभव नहीं है।

9. कौन से गुणस्थानों में आठ या सात कर्मों का बंध होता है, समझाते?

Ans. पहले दूसरे चौथे पांचवें छठे और सातवें गुणस्थान में 8 या 7 कर्मों का बंध होता है, 7 कर्मों का बंध प्रतिक्षण होता है। आयुष्य कर्म का बंध जीवन

में एक बार ही होता है, तो इस दृष्टि से आयुष्य बंध के समय 8 कर्मों का बंधन होता है, और अन्य समय में 7 कर्मों का बंधन होता है।

10. चौदहवें गुणस्थान में कर्मों का बंध क्यों नहीं होता है?

Ans. चौदहवें गुणस्थानमें बंधन के निमित्त कषाय और योग दोनों का अभाव है, इसलिए वहां किसी प्रकार का बंधन नहीं होता है

पाठ 12

कर्म बंध के आठ हेतु

1. कर्म बंध का मुख्य हेतु क्या है?

Ans. कर्म बंध का मुख्य हेतु है आश्रव। आश्रम पांच है, मिथ्यात्व अत्रत, प्रमाद, कषाय व योग।

2. आत्मा के साथ कर्म का बंधन क्यों होता है?

Ans. कर्म बंधन का मूल कारण है आश्रव।आश्रव पांच है- मिथ्यात्व, अत्रत, प्रमाद, कषाय और योग।कर्म पुद्गलों को ग्रहण करने का सर्वाधिकार योग आश्रव को प्राप्त है।योग तीन प्रकार का होता है, मन योग, वचन योग और काययोग इन तीनों में काय योग स्थूल है, इसीलिए मन और वचन योग की प्रवृत्ति का हेतु का काययोग है। संसारी जीव के जब तक योग रहता है तब तक बंधन है।

3. आत्मा चेतन पर कर्म जड़ का प्रभाव कैसे पड़ता है?

Ans. कर्म का मन वचन व काय पर गहरा प्रभाव पड़ता है।इन तीनों का सीधा संबंध आत्मा से है।इसीलिए कर्म आत्मा द्वारा आकर्षित होते हैं।स्थूल रूप से भी यह देखा जाता है - जैसे शराब पीने वाला व्यक्ति अपनी चेतना

को खो बैठता है पागल बन जाता है। अचेतन शराब का चेतन व्यक्ति पर कितना प्रभाव पड़ता है, फिर कर्म का आत्मा पर प्रभाव क्यों नहीं हो सकता।

4. बंधन सहेतुक या निर्हेतुक हैं?

Ans. बंधन सहेतुक है। कारण के बिना कार्य नहीं हो सकता यह शाश्वत नियम है। इसी के आधार पर कारण- कार्यवाद की परंपरा चली है। कर्म बंधन भी अकारण नहीं है।

5. ज्ञानावरणीय कर्म बंधन का हेतु क्या है?

Ans. ज्ञान या ज्ञानी के प्रति असद् व्यवहार करना।

6. दर्शनावरणीय कर्म बंधन का हेतु क्या है?

Ans. दर्शन या दर्शनी के प्रति असद् व्यवहार करना।

7. वेदनीया कर्म बंधन का हेतु क्या है?

Ans. दुःख देने और दुःख ना देने की प्रवृत्ति वेदनीय कर्म बंध का हेतु है। दुःख देने से असाता वेदनीय कर्म का बंध। दुःख ना देने पर सात वेदनीय कर्म का बंध होता है।

8. मोह कर्म का बंधन का हेतु क्या है?

Ans. तीव्र कषाय का प्रयोग करने से मोह कर्म का बंधन होता है।

9. आयुष्य कर्म बंधन का हेतु क्या है?

Ans. आयुष्य बंधन चार गति में होता है नरक आयुष्य, तिर्यच आयुष्य, मनुष्य आयुष्य और देव होता है।

10. नाम कर्म के बंधन का हेतु क्या है?

Ans. कथनी और करनी की समानता से शुभ नाम, तथा असमानता से अशुभ नाम कर्म का बंध होता है।

11. गोत्र कर्म के बंधन का हेतु क्या है?

Ans. अहंकार करने से नीच गोत्र और अहंकार का विसर्जन करने से उच्च गोत्र कर्म का बंधन होता है।

12. अंतराय कर्म के बंधन का हेतु क्या है?

Ans. किसी के कार्य में बाधा डालने से अंतराय कर्म का बंधन होता है।

पाठ 13

आठ कर्मों में बंधकारक कर्म दो हैं-

1. आत्मा के कर्म का बंधन क्यों होता है?

Ans. आत्मा और कर्म का बंधन अनादि काल से चला आ रहा है। बंधन का कारण मोहनीय और नाम कर्म है, क्योंकि बंधन में दो तत्व काम करते हैं आसक्ति और स्पंदन। दूसरे शब्दों में कषाय और योग यह दोनों तत्व ना हो तो आत्मा के कर्म बंधन नहीं होता।

2. बंधन करने वाला कौन है?

Ans. जैन दर्शन के अनुसार आत्मा स्वयं कर्ता है, आत्मा स्वयं बंधती है, और स्वयं पुरुषार्थ से ही मुक्त होती है।

3. आत्मा बंधने और मुक्त होने में स्वतंत्र है तो वह बंधेगी ही क्यों?

Ans. जैसा की आत्मा और कर्म का बंध अनादि काल से चला आ रहा है। आत्मा पहले से ही कर्म पुद्गलों से आबद्ध है। पूर्व बंधन के उदय से आत्मा में स्पंदन होता है। स्पंदन से सत -असत प्रवृत्ति होती है, और उससे नया बंधन होता है।

4. मोहनीय कर्म से अशुभ कर्म का बंधन क्यों होता है?

Ans. क्योंकि मोह कर्म का संबंध कषाय से है।

5. नाम कर्म से शुभ कर्म का बंध कैसे?

Ans. क्योंकि पुण्य या शुभ कर्म के बंधन में नाम कर्म को निमित्त माना गया है।

6. बंधन कारक कर्म केवल नाम कर्म को क्यों बताया है, जिससे शुभ कर्म का बंधन बताया है। अशुभ कर्म का बंधन कैसे?

Ans. कर्म पुद्गलों का आकर्षण योग आश्रव के द्वारा होता है, फिर चाहे बंधन पुण्य का हो या पाप का। योग आश्रव का संबंध नाम कर्म से है तो इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि आठ कर्मों में बंधन कारक कर्म केवल नाम कर्म है। और नाम कर्म से होने वाली जिस प्रवृत्ति के साथ मोह कर्म का योग होता है वह अशुभ हो जाती है।

पाठ 14

क्रिया के पांच प्रकार

1. क्रिया का अर्थ क्या है?

Ans. क्रिया का अर्थ है कर्म बंधन की प्रवृत्ति।

2. नौ तत्त्वों में कर्म बंधन के हेतुभूत तत्त्व किसे माना गया है?

Ans. आश्रव को।

3. ग्रंथों में आश्रव के कितने भेद हैं व उनमें कितनी क्रियाओं का समावेश किया है?

Ans. ग्रंथों में आश्रव के 42 भेद बताए हैं, उनमें 25 क्रियाओं का समावेश किया गया है।

4. प्रथम वर्ग की पांच क्रियाएं कौन सी हैं?

Ans. कायिकी

- आधिकरणिकी
- प्रादोषिकी
- पारितापनिकी
- प्राणातिपातक्रिया

5. प्रकारान्त से क्रियाओं का एक वर्ग बताया है, उनके नाम बताओ?

Ans. आरंभिकी

- पारिग्रहिकी
- मायाप्रत्यया
- अप्रत्याख्यान क्रिया
- मिथ्यादर्शन प्रत्यया

6. कायिकी का अर्थ क्या है?

Ans. हिंसा आदि में प्रवृत्त काया से होने वाली क्रिया।

7. आधिकरणिकी का अर्थ क्या है?

Ans. शरीर या किसी उपकरण का शस्त्र रूप में प्रयोग करने से होने वाली क्रिया।

8. प्रादोषिकी का अर्थ क्या है?

Ans. कषाय से होने वाली क्रिया।

9. पारितापनिकी का अर्थ क्या है?

Ans. किसी प्राणी को परिताप- कष्ट पहुंचाने से होने वाली क्रिया।

10. प्राणातिपात क्रिया का अर्थ क्या है?

Ans. प्राणों का अतिपात - वियोजन करने से होने वाली क्रिया।

11. आरंभिकी का अर्थ क्या है?

Ans. हिंसात्मक प्रवृत्ति से होने वाली क्रिया।

12. पारिग्रहिकी का अर्थ क्या है?

Ans. परिग्रह से होने वाली क्रिया।

13. मायाप्रत्यया का अर्थ क्या है?

Ans. कषाय से होने वाली क्रिया।

14. अप्रत्याख्यान क्रिया का अर्थ क्या है?

Ans. अत्याग भाव से होने वाली क्रिया।

15. मिथ्यादर्शन प्रत्यया का अर्थ क्या है?

Ans. मिथ्यात्व से होने वाली क्रिया।

16. कम से कम कितनी क्रियाएं होती हैं, और ज्यादा से ज्यादा कितनी हो सकती है

Ans. कम से कम तीन क्रियाएं अवश्य होती हैं कदापि 4 और 5 की दुआएं भी एक साथ हो सकती हैं।

17. यह क्रियाएं त्याज्य क्यों हैं?

Ans. इन सब क्रियाओं को छोड़कर अक्रिया बनने वाला प्राणी ही बंधन से मुक्ति की ओर प्रयाण कर सकता है। उक्त दोनों ही प्रकार की क्रियाओं से कर्म का बंधन होता है। इसीलिए यह त्याज्य है।

पाठ 15

संज्ञा के 10 प्रकार

1. संज्ञा का अर्थ क्या है?

Ans. अभिलाषा, मनोविज्ञान। जीव की एक विशेष प्रकार की वृत्ति का नाम संज्ञा है।

2. संज्ञा किन प्राणियों में पाई जाती है?

Ans. यह संसार की बहुसंख्यक प्राणियों में पाई जाती है। किसी प्राणी में यह संज्ञा बहुत गहरी होती है, किसी में बहुत साधारण।

3. संज्ञा की परिभाषा क्या है?

Ans. संज्ञा की अनेक परिभाषाएं हैं। जिनमें यह कुछ विशेष है :-

1. जिस से जाना जाता है, संवेदन किया जाता है वह संज्ञा है।
2. मानसिक ज्ञान अथवा समनस्कता का नाम संज्ञा है।
3. भौतिक वस्तु की प्राप्ति तथा प्राप्त वस्तु के संरक्षण की व्यक्त व अव्यक्त अभिलाषा का नाम संज्ञा है।
4. वेदनीय अथवा मोहनिया कर्म के उदय से प्राणी में आहार आदि की प्राप्ति के लिए जो स्पष्ट और अस्पष्ट व्यग्रता अथवा सक्रियता रहती है वह संज्ञा है।

4. संज्ञा के कितने प्रकार हैं? नामों का उल्लेख करें।

Ans. संज्ञा के 10 प्रकार हैं :-

- आहार संज्ञा
- भय संज्ञा
- मैथुन संज्ञा
- परिग्रह संज्ञा
- क्रोध संज्ञा
- मान संज्ञा

- माया संज्ञा
- लोभ संज्ञा
- लोक संज्ञा
- ओघ संज्ञा

5. अहार संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. भोजन के लिए गहरी अभीप्सा और आसक्ति का मनोभाव।

6. भय संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. किसी कल्पित या वास्तविक भयोत्पादक स्थिति में होने वाली घबराहट।

7. मैथुन संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. वासना की वृत्ति, आत्मा को विस्मृत कर पर के साथ भ्रमण करने का मनोभाव।

8. परिग्रह संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. पदार्थ के ग्रहण और संरक्षण की मनोवृत्ति और पदार्थ के प्रति होने वाला ममत्व।

9. क्रोध संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. राग -द्वेष मुलक उत्तेजना रूप मनोभाव।

10. मान संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. अंहकार को उत्पन्न करने और बनाए रखने वाली मनोवृत्ति।

11. माया संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. छलना, वंचना आदि की मनोवृत्ति।

12. लोभ संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. लालसा बढ़ाने वाली मनोवृत्ति।

13. लोक संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. विशिष्ट या अर्जित मनोवृत्ति। लोक संज्ञा व्यक्तिक चेतना का प्रतीक है। जो आचरण सामुदायिक चेतना के कारण नहीं होते, किंतु व्यक्ति की अपनी विशिष्ट रूप से या संस्कार के कारण होते हैं। जैसे माता-पिता के गुण दोषों का संक्रमण, पूर्वजों की व्यवसायिक परंपरा का अनुगमन आदि आचरण जो लोक संज्ञा के कारण होते हैं।

14. ओघ संज्ञा से क्या तात्पर्य है?

Ans. सामान्य या नैसर्गिक मनोवृत्ति। ओघ संज्ञा सामुदायिकता की संज्ञा है। यह प्राणी की सामान्य वृत्ति है। जैसे बेल को सहारा मिलने से ऊपर चढ़ जाती है। भूकंप या तूफान आने से पहले ही पशु पक्षी उसका आभास पाकर सुरक्षित स्थान में पहुंच जाते हैं। ऐन्द्रियिक मानसिक ज्ञान नहीं किंतु चेतना के अनावरण की स्वतंत्र क्रिया है। यह करने से नहीं सहज होती है। इसीलिए इसे ओघ संज्ञा कहा गया है।

15. संज्ञा के 10 प्रकारों को कितने भागों में बांटा गया है, और वह कौन-कौन से हैं?

Ans. संज्ञा के 10 प्रकारों को दो भागों में बांटा गया है जिसमें प्रथम 8 संज्ञा संवेगात्मक और शेष दो प्रकारों को ज्ञानात्मक माना गया है।

पाठ 16

आहार के तीन प्रकार

1. संसार में रहने वाले किसी भी जीव के जीवन का आधार क्या है?

Ans. "आहार" जब तक आहार का आधार बना रहता है जीव जीवित रहता है।

2. आहार कितने प्रकार का होता है?

Ans. तीन प्रकार का होता है ओज आहार, रोम आहार, कवल आहार ।

3. ओज आहार से क्या तात्पर्य है?

Ans. ओज आहार का ग्रहण जीव के उत्पत्ति के समय होता है। इससे आहार के परिणमन और विसर्जन की पौद्गलिक क्षमता प्राप्त हो जाती है। ओज आहार की क्षमता द्वारा जीव एक साथ आवश्यक पुद्गलों को खींच लेता है। उन सब को आत्मसात कर लेता है। दूसरे क्षण वह फिर पुद्गलों को ग्रहण करता है पर उसके साथ कुछ पुद्गलो को छोड़ भी देता है। ग्रहण और विसर्जन का यह क्रम जीवन भर चलता रहता है। दूसरे शब्दों में यह जीवन की शक्ति है, जब तक यह रहता है मृत्यु नहीं होती है।

4. उदाहरण द्वारा समझाएं ओज आहार का ग्रहण और विसर्जन का यह क्रम चलता रहता है?

Ans. उबलते हुए घी या तेल में कोई पुआ छोड़ा जाता है तो वह एक साथ उस घी या तेल को अपने भीतर समेट लेता है। दूसरे क्षण वह घी या तेल को सोखता है तो छोड़ता भी है। ग्रहण और विसर्जन का यह क्रम चलता रहता है।

5. रोम आहार क्या है?

Ans. ओज आहार ग्रहण करने के बाद शरीर निर्मित होता है ।उसके अवयवों का विकास होने के बाद गर्भ अवस्था में ही रोम आहार शुरू हो जाता है ।यह आहार भी जीवन के अंत तक निरंतर चलता रहता है, दिन -रात, सोते -जागते, घूमते- ठहरते और यह भी जीवन धारण में पूरा सहयोग रखता है।

6. कवल आहार से क्या तात्पर्य है?

Ans. यह समय-समय पर ग्रहण किया जाता है। जीवन धारण में इस आहार का उपयोग है, किंतु इसके ही आधार पर जीवन चलता है, ऐसी बात नहीं है।

इस आहार में खाद्य, पेय लेहमआदि सब प्रकार के पदार्थों का समावेश है। यह मुख के द्वारा ग्रहण किया जाता है। इस आहार का उपयोग जब तक ही होता है, जब तक शरीर को ओज आहार का पोषण मिलता है।

7. कौन से आहार सूक्ष्म और स्थूल हैं?

Ans. ओज आहार और रोम आहार सूक्ष्म है। कवल आहार स्थूल हैं।

पाठ 17

जन्म के तीन प्रकार

1. संसारी जीव का एक निश्चित क्रम क्या है?

Ans. आत्मा जब तक कर्म मुक्त नहीं होती, उसे जन्म और मृत्यु की परिक्रमा करनी होती है। जन्म के बाद मृत्यु और मृत्यु के बाद जन्म यह निश्चित क्रम है।

2. जन्म का अर्थ क्या है?

Ans. जन्म का अर्थ उत्पत्ति है।

3. क्या सब जीवों की समान उत्पत्ति होती है? उत्पत्ति किस प्रकार से होती है?

Ans. सब जीवों के उत्पन्न होने का क्रम एक समान नहीं होता। इसलिए जन्म के अनेक प्रकार होते हैं। मुख्यतः तीन प्रकार की उत्पत्ति बताई है, गर्भ, उपपात और संमूर्च्छम।

4. गर्भज से क्या तात्पर्य है?

Ans. जिन जीवों की उत्पत्ति नर, मादा के संयोग से होती है, उनके जन्म को गर्भज का है।

5. कौन - कौन से जीव गर्भज होते हैं, उनकी उत्पत्ति के कितने प्रकार से होती हैं?

Ans. इस श्रेणी में पांच इन्द्रिय वाले मनुष्य और पंचेन्द्रिय तिर्यच्च आते हैं। और इनकी उत्पत्ति के स्थान तीन बताए गए हैं।

जरायुज, अण्डज पोतज।

6. जरायुज गर्भ से क्या तात्पर्य है, कौनसे जीव जरायुज से उत्पन्न होते हैं?

Ans. जो जी जन्म के समय एक विशेष प्रकार की झिल्ली से परिवेष्टित रहते हैं, उनको जरायुज कहते हैं। मनुष्य, गाय आदि प्राणी जरायुज होते हैं।

7. अण्डज गर्भ से क्या तात्पर्य है, कौन से जीव इस वर्ग में आते हैं?

Ans. जो जीव अण्डों से उत्पन्न होते हैं, वह अण्डज कहलाते हैं। पक्षी, सर्प आदि प्राणी इस वर्ग में आते हैं।

8. पोतज गर्भ से क्या तात्पर्य है, कौन से जीव इस वर्ग में आते हैं?

Ans. जो जीव जन्म के समय खुलने अंग वाले होते हैं, जन्म के तत्काल बाद दौड़ने लगते हैं वह पोतज कहलाते हैं। हाथी, खरगोश, चूहा आदि प्राणियों की गणना इस वर्ग में की जाती है।

9. उपपात जन्म से क्या तात्पर्य है इस वर्ग में कौन से जीव आते हैं?

Ans. यह जन्म का दूसरा प्रकार बताया गया है। इससे उत्पन्न होने वाले जीव उपपातज कहलाते हैं। और इस वर्ग में देव और नारक आते हैं। इनका जन्म नियत स्थान में होता है, जन्म के बाद बहुत कम समय (अंतर्मुहूर्त) में ही इनके शरीर का पूरा निर्माण हो जाता है।

10. देवों का उत्पत्ति स्थल कौन सा है?

Ans. देवों का उत्पत्ति स्थल शय्या है।

11. नारको का उत्पत्ति स्थल कौन सा है?

Ans. नारको का उत्पत्ति स्थल कुंभी है।

12. समूच्छिन्न जन्म से क्या तात्पर्य है, इस वर्ग में कौनसे जीव आते हैं।

Ans. जो जीव स्त्री और पुरुष या नर और मादा के संयोग बिना ही लोकाकाश में बिखरे हुए परमाणु और विशिष्ट पर्यावरण के योग से स्वतः उत्पन्न होते हैं वह समूच्छिन्न कहलाते हैं। देव, नारक, गर्भज मनुष्य और गर्भज तिर्यच के अतिरिक्त सभी प्राणी समूच्छिन्न जन्म प्राप्त करते हैं।

एकेंद्रिय से लेकर चतुरिंद्रिय तक सभी जीव निश्चित रूप से समूच्छिन्न होते हैं। पंचेन्द्रिय के कुछ तिर्यच समूच्छिन्न होते हैं। मनुष्य के मल, मूत्र, श्लेष्म आदि असूची 14 स्थानों से उत्पन्न होने वाले मनुष्य समूच्छिन्न कहलाते हैं।

13. समूच्छिन्न जीव का अवगाहन वह आयुष्य कितना होता है?

Ans. इनका शरीर अंगुल के असंख्यातवें भाग जितना सा होता है। और यह जन्म के तत्काल बाद अपर्याप्त अवस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

पाठ 18

मरण के तीन प्रकार हैं

1. मरण के कितने प्रकार हैं, नाम बताएं?

Ans. मरण के तीन प्रकार बताए हैं, बाल मरण, पंडित मरण और बाल-पंडित मरण।

2. बाल मरण से क्या तात्पर्य है?

Ans. असंयमी का मरण बाल मरण कहलाता है।

3. बाल मरण किन जीवों के होता है, इसका संबंध किससे होता है?

Ans. बाल मरण पहले से चौथे गुणस्थान वाले सभी जीवों को होता है, तीसरे गुणस्थान को छोड़कर। इसका संबंध एक ओर मिथ्यात्व एवं अज्ञान से है दुसरी ओर अत्रत से है। चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व चला जाता है, सम्यक्त्व की प्राप्ति होजाती है, किंतु वह व्रत नहीं होता। इस दृष्टि से चौथे गुणस्थान में बाल मरण माना जाता है।

4. पंडित मरण से क्या तात्पर्य है?

Ans. पंडित मरण पूर्ण संयमी व्यक्ति के होता है।

5. पंडित मरण किन जीवों को होता है?

Ans. पंडित मरण छठे से चौदहवें गुणस्थान स्थान तक होता है। इन स्थानों में साधु के अतिरिक्त कोई जीव नहीं हो सकता। साधु सावद्ययोगविरति रूप संयम की आराधना करता है। संयम की क्षमता के कारण ही इन गुणस्थानों स्थानों में होने वाले मरण को पंडित मरण कहा जाता है। तीसरे गुणस्थान के भांति बारहवें और तेरहवें में गुणस्थान में भी मृत्यु नहीं होती।

6. चौदह गुणस्थानों में किन-किन गुणस्थानों को अमर माना गया है?

Ans. तीन गुणस्थानों को अमर माना गया है। तीसरा गुणस्थान, बारहवा गुणस्थान और तेरहवां गुणस्थान।

7. बाल- पंडित मरण से क्या तात्पर्य है?

Ans. संयमासंयमी के मरण को बाल- पंडित मरण कहा जाता है। इसमें बाल और पंडित इन दो शब्दों का प्रयोग और असंयम और संयम को एक साथ बताने के लिए है।

8. बाल -पंडित मरण किस गुण स्थान में होता है?

Ans. बाल पंडित मरण पांचवे गुणस्थान में होता है। पांचवें गुणस्थान का अधिकारी श्रावक है। उसके जितनी सीमा तक असंयम है उसकी अपेक्षा बाल मरण है और जितनी अपेक्षा से संयम है, उसकी अपेक्षा से पंडित मरण है। असंयम और संयम की एक साथ विविक्षा होने के कारण इस मरण का नाम भी बाल मंडित मरण है।

पाठ 19

अंतराल गति के दो प्रकार

1. गति से क्या तात्पर्य हैं?

Ans. साधारण भाषा में गति का अर्थ है चलना। पर यहां गति का अर्थ है अंतराल गति। एक योनि से दूसरी योनि में जन्म लेने की यात्रा गति है। यह दो जन्मों के बीच की गति है।

2. यह गति किन जीवों करनी ही होती है?

Ans. संसारी के सभी प्राणियों को यह गति करनी होती है।

3. गति के कितने प्रकार हैं?

Ans. गति के दो प्रकार हैं, ऋजु गति और वक्र गति।

4. ऋजु गति का क्या अर्थ है?

Ans. ऋजु का अर्थ है सीधा। जिस गति में कोई मोड़ ना हो, घुमाव न हो वह ऋजु गति है।

5. ऋजु गति का काल मान क्या है?

Ans. ऋजु गति में काल का न्यूनतम विभाग एक समय लगता है। काल का इससे छोटा विभाग कोई है नहीं अन्यथा ऋजु की पहुंच वहां तक हो जाती।

6. वक्र गति का अर्थ क्या है?

Ans. वक्र गति का अर्थ है टेढ़ा। जिस गति में एक, दो या तीन मोड़ हो वह वक्र गति कहलाती है। जिस स्थान में जीव मृत्यु को प्राप्त होता है वहां से विषम श्रेणी के आकाश प्रदेशों में उत्पन्न होने वाला जीव वक्र गति करता है।

7. ऋजु गति अनाहारक है या आहारक समझाएं?

Ans. ऋजुगति करने वाला जीव एक समय में अपने गंतव्य तक पहुंच जाता है इसीलिए वह अनाहारक नहीं होता। कोई भी जीव पूर्व शरीर को छोड़ता है तो वह अंतिम समय तक आहार लेता है वहां से अगले भाव में पहुंचने के प्रथम समय में ही आहार ले लेता है इसीलिए वह अनाहारक नहीं हो सकता।

8. वक्र गति अनाहारक कैसे?

Ans. वक्र गति वाला जीव एक या दो घुमाव लेकर अपने गंतव्य स्थान तक पहुंचता है। घुमाव लेने से अंतराल गति में समय अधिक लग जाता है, वहां किसी प्रकार का आहार उपलब्ध न होने से जीवन अनाहारक रहता है।

9. अंतराल गति में जीव को सशरीर कहलाता है।

Ans. एक भव से दूसरे भव में जाने वाला जीव स्थूल शरीर को छोड़कर जाता है, किंतु सूक्ष्म शरीर उसके साथ रहता है इसलिए वह सशरीर कहलाता है। पांचों शरीर में तेजस और कारण यह दो शरीर सूक्ष्म है।

10. यह सूक्ष्म शरीर सभी जीव के साथ कब तक रहते हैं?

Ans. यह दो सूक्ष्म शरीर जब तक जीव के साथ रहते हैं जब तक वह कर्म मुक्त नहीं हो जाता।

पाठ 20

छद्मस्थ के दो प्रकार हैं-

1. छद्मस्थ से क्या तात्पर्य है?

Ans. जब तक व्यक्ति को केवल ज्ञान उपलब्ध नहीं होता तब तक वह छद्मस्थ रहता है। और 'अकेवली छद्मस्थः' यह परिभाषा भी उक्त तथ्य को पुष्ट करती है।

2. छद्म का अर्थ करता है?

Ans. यहां छद्म शब्द का अर्थ है घाती कर्मों का उदय ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अंतराय यह चार कर्म घाती है। इन कर्मों की विद्यमानता में किसी को केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती ।

3. छद्मस्थ के कितने प्रकार हैं?

Ans. छद्मस्थ के दो प्रकार हैं, सकषाय (सराग), अकषाय (वीतराग)

4. सकषाय से क्या तात्पर्य है, कौन से जीव छद्मस्थ सकषाय होते हैं?

Ans. कषाय शब्द से राग और द्वेष अथवा क्रोध, मान, माया और लोभ इन चारों का ग्रहण किया गया है ।यह पहले से दसवें गुणस्थान तक रहता है।इन गुणस्थानों में रहने वाला हर जीव सकषाय छद्मस्थ होते हैं।

5. अकषाय छद्मस्थ कौनसे जीव है?

Ans. अकषाय छद्मस्थ ग्यारहवें और बारहवें गुणस्थान वाले जीव होते हैं।

पाठ 21

वीतराग के दो प्रकार हैं-

1. वीतराग का अर्थ क्या है?

Ans. वीतराग का अर्थ है - राग द्वेष का उपशम या क्षय ।

2. नौवें गुणस्थान में किस का उपशम या क्षय होता है?

Ans. नौवें गुणस्थान में क्रोध, मान और माया का उपशम या क्षय होता है।

3. सूक्ष्म लोभ कौनसे गुणस्थान में रहता है?

Ans. दसवें गुणस्थान में सूक्ष्म लोभ बाकी रहता है।

4. वीतराग के कितने प्रकार होते हैं?

Ans. वीतराग के दो प्रकार होते हैं। छद्मस्थ वीतराग और केवली वीतराग।

5. छद्मस्थ वीतराग से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो जीव उपशम श्रेणी में स्थित होता है। वह दसवें गुणस्थान से ग्यारहवें गुणस्थान में जाता है सूक्ष्म लोभरूप मोह का उपशमन करता है। जो जीव क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ होता है, वह मोह कर्म का क्षय कर ग्यारहवें गुणस्थान को लांघ कर बारहवें गुणस्थान में पहुंचता है इस गुणस्थान में राग -द्वेष नहीं होता फिर भी छद्मस्थता रहती है। क्योंकि मोह कर्म को छोड़कर बाकी तीन घाती कर्मों का उदय रहता है।

6. केवली वीतराग से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो जीव घाती कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त करता है, वह केवली वीतराग कहलाता है।

7. वीतराग के गुणस्थान कितने?

Ans. वीतराग के गुणस्थान चार हैं, ग्यारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक वीतराग कहलाता है।

8. छद्मस्थ वीतराग का गुणस्थान कौनसा?

Ans. ग्यारहवां व बारहवां गुण

पाठ 22

बंध के दो प्रकार

1. बंध क्या है?

Ans. आत्म -प्रदेशों के साथ कर्म पुद्गलों का एकीभाव हो जाना बंध कहलाता है।

2. बंध के कितने प्रकार हैं?

Ans. बंध के दो प्रकार हैं। ईर्यापथिक और साम्परायि।

3. बंध कितने गुणस्थान तक होता है?

Ans. बंध तेरहवें गुणस्थान तक होता है।

4. ईर्यापथ का अर्थ क्या है?

Ans. ईर्यापथ का अर्थ है - योग । योग अर्थात मन, वचन, और काम की प्रवृत्ति

5. ईर्यापथिक बंध से क्या तात्पर्य है?

Ans. अकषाय या वीतराग के जो बंध होता है वह ईर्यापथिक बंध होता है। कषाय रहित योग से जो बंध होता है वहीं ईर्यापथिक बंध कहलाता है।

6. साम्परायिक बंध से क्या तात्पर्य है?

Ans. जो बंध सकषायी या सराग के होता है, उसे साम्परायिक बंध कहते हैं।

7. ईर्यापथिक बंध किन गुणस्थान में होता है?

Ans. ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान तक ईर्यापथिक बंध होता है।

8. ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान में आसक्ति या कषाय का अत्यंत अभाव होने पर भी बंध कैसे ?

Ans. ग्यारहवें से तेरहवें गुणस्थान में योगों की चंचलता के कारण बंध होता है।

9. ईर्यापथिक बंध की सता कैसी होती है?

Ans. कषायजनित स्निग्धता के अभाव में बंध टिकाऊ नहीं होता । जैसे रुखी दीवार पर मिट्टी फेंकी जाए तो वह एक बार चिपकती है, किन्तु तत्काल झड़कर अलग हो जाती है। इसी प्रकार वीतराग के कर्म पुद्गलों का स्पर्शमात्र होता है।

10. ईर्यापथिक बंध का कालमान कितना होता है?

Ans. ईर्यापथिक बंध दो समय की स्थिति वाला होता है।

11. साम्प्रदायिक बंध के गुणस्थान कितने ?

Ans. पहले से दसवें गुणस्थान तक साम्परायिक बंध होता है।

12. साम्परायिक बंध किन जीवों के होता है?

Ans. यह बंध संसार के उन सब प्राणियों के होता हैं, जो सकषाय होते हैं।

9. केवली वीतराग के गुणस्थान कितने?

Ans. केवली वीतराग के गुणस्थान दो

तेरहवां और चौदहवां।

पाठ 23

संहनन के छह प्रकार हैं-

1. संहनन का अर्थ क्या है?

Ans. संहनन का अर्थ है- शरीर में होने वाली अस्थि- संरचना।

2. चारों गति में संहनन किसके होता हैं?

Ans. चारों गति में से संहनन मनुष्य और तिर्यच के ही होता है।

3. देव और नारक में संहनन क्यों नहीं होता?

Ans. देव और नारक के जीव वैक्रिय शरीर वाले होते हैं। उस शरीर में हाड़, मांस आदि सातों ही धातुएं नहीं होती, इसलिए वहां अस्थि -संरचना नहीं होती।

4. सात धातु कौन- कौन से हैं?

Ans. 1. रस धातु

2. रक्त धातु

3. मांस धातु

4. मेद धातु

5. अस्थि धातु

6. मज्जा धातु

7. शुक्र धातु

5. मनुष्य और तिर्यच के संहनन क्यों होता है?

Ans. मनुष्य और तिर्यच गति में उत्पन्न होने वाले जीवों के औदारिक शरीर होता है। यह शरीर हाड़ मांस आदि धातुओं से निर्मित होता है। अतः उक्त छहों संहनन इसी शरीर में प्राप्त होते हैं।

6. संहनन कितने प्रकार के होते हैं?

Ans. संहनन छह प्रकार के होते हैं:-

1. वज्रऋषभनाराच

2. ऋषभनाराच

3. नाराच

4. अर्धनाराच

5. कीलिका

6. सेवार्त

7. सेवार्त संहनन संरचना किस प्रकार होती है?

Ans. सेवार्त संरचना:- कुछ शरीर में अस्थियां परस्पर जुड़ी हुई नहीं होती, आमने-सामने होती हैं। केवल बाहर से शिरा, स्नायु, मांस आदि लिपट जाने के कारण संघटित होती हैं। इस प्रकार की अस्थि - संरचना को सेवार्त कहा गया है। यह सबसे दुर्बल अस्थि संरचना है। इसकी तुलना शिराबद्ध सर्प की अस्थियों से की गई है।

8. कीलिका संहनन संरचना किस प्रकार होती है।

Ans. जिसमें अस्थियों के छोर परस्पर जुड़े हुए होते हैं- एक दूसरे का स्पर्श किये होते हैं, उसे 'कीलिका' संहनन कहा जाता है।

9. अर्धनाराच संहनन संरचना किस प्रकार होती है?

Ans. एक अस्थि - रचना ऐसी होती है, जिसमें नाराच (मर्कटबंध) आधा होता है-अस्थियों के छोर परस्पर एक ओर से गुंथे हुए होते हैं, उसे अर्धनाराच कहा जाता है।

10. नाराच संहनन संरचना किस प्रकार होती है?

Ans. जिसमें नाराचा पूरा होता है- अस्थियां दोनों ओर से गुंथी हुई होती है। उसे नाराच कहा जाता है।

11. ऋषभनाराच संहनन संरचना किस प्रकार होती है?

Ans. जिसमें परस्पर गुंथे हुए दोनों अस्थियों के छोरों पर तीसरी अस्थि का परिवेष्टन होता है। उसे ऋषभनाराच कहा जाता है।

12. वज्रऋषभनाराच संहनन की संरचना किस प्रकार होती है?

Ans. जिसमें उक्त तीनों अस्थियों को भेदकर अस्थिकील (बोल्ट) आर-पार कसा हुआ होता है। उसे वज्रऋषभनाराच कहा जाता है।

13. सर्वोत्कृष्ट शक्तिशाली संहनन कौनसा है, क्यों?

Ans. वज्रऋषभनाराच सर्वोत्कृष्ट शक्तिशाली संहनन होता है। यह तीन शब्दों से प्रयुक्त है।

वज्र, ऋषभ और नाराच। अस्थिकील के लिए वज्र, परिवेष्टिन अस्थि के लिए ऋषभ और परस्पर गुंथी हुई अस्थि के लिए नाराच शब्द प्रयोग किया गया है।

14. साधना और स्वास्थ्य दोनोें दृष्टियों से अस्थि संरचना का क्या महत्व है?

Ans. चिकित्सा शास्त्र में स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अस्थि संरचना पर बहुत ध्यान दिया गया है। स्वास्थ्य सम्पन्न व्यक्ति के लिए एक शब्द है स्वस्थ। स्वस्थ शब्द का एक अर्थ है अपने में रहना। इसका दुसरा अर्थ है जिसकी अस्थियां शोभन हो, मजबूत हों, वह स्वस्थ होता है। शुक्ल ध्यान की साधना के लिए और मोक्ष गमन के लिए वज्रऋषभनाराच का होना जरूरी है। संहनन को पुरा समझने के निष्कर्ष निकलता है। साधना और स्वास्थ्य दोनोें दृष्टियों से इनका महत्वपूर्ण स्थान है।

15. वज्रऋषभनाराच संहनन किन जीवों के होता है?

Ans. यह शरीर केवल मनुष्य के होता है, उसमें शुक्ल ध्यान साधना, मोक्षगामी शलाका पुरुष (तीर्थकर, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव) और यौगलिक मनुष्य के एकमात्र वज्रऋषभनाराच संहनन संरचना होता है।

16. सेवार्त संहनन संरचना किन जीवों में होती है?

Ans. पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असंजी तिर्यच, असंजी मनुष्य में एक सेवार्त संहनन संरचना होती है।

17. छहों संहनन किन जीवों में पाये जाते हैं?

Ans. संजी तिर्यच, और संजी मनुष्य में छहों संहनन पाये जाते हैं।

पाठ 24

संस्थान में छह प्रकार हैं-

1. संस्थान का अर्थ क्या है?

Ans. संस्थान का अर्थ है- आकृति । प्रस्तुत प्रसंग में इसका अर्थ है अवयवों की रचना ।

2. संस्थान के कितने प्रकार हैं?

Ans. किसी शरीर के अवयवों की रचना कैसी है, इसकी जानकारी संस्थानों के स्वरूप - बोध से की जा सकती है। इसके छह प्रकार हैं।

1. समचतुरस्र
2. न्यग्रोधपरिमंडल
3. सादि
4. कुब्ज
5. वामन
6. हुण्डक

3. समचतुरस्र संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. अस्र का अर्थ है- कोण । जिस शरीर के चारों कोण समान हों, जिस शरीर के अवयव अपने -अपने प्रमाण के अनुसार हों और जिस शरीर की संरचना में ऊर्ध्व, अधः एवं मध्य भाग सम हों, वह संस्थान समचतुरस्र होता है।

4. न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. न्यग्रोध का अर्थ है- बड का वृक्ष । जिस शरीर की संरचना में वटवृक्ष की भांति नाभि से ऊपर का भाग बड़ा और नीचे का भाग छोटा हो, उसे न्यग्रोधपरिमण्डल संस्थान कहलाता है।

5. सादि संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. जिस शरीर में ऊपर का भाग छोटा और नीचे का भाग बड़ा हों, वह सादि संस्थान कहलाता है।

6. कुब्ज संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. जिस शरीर की संरचना में पीठ पर पुद्गलों का अधिक संचय हो, वह कुब्ज संस्थान कहलाता है।

7. वामन संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. जिस शरीर के सभी अंग - उपांग छोटे हों, वह वामन संस्थान कहलाता है।

8. हुण्डक संस्थान से क्या अभिप्राय है?

Ans. जिस शरीर की रचना में कोई अवयव प्रमाणोपेत नहीं होता, जिसके सभी अंग- उपांग हुण्ड की तरह संस्थित हों, वह हुण्डक संस्थान है।

9. हुण्डक संस्थान किन जीवों में होता है?

Ans. सात नारकी, पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असंजी तिर्यच और असंजी मनुष्य में एक हुण्डक संस्थान ही होता है।

10. समचतुरस्र संस्थान किन जीवों में होता है?

Ans. देव, यौगलिक मनुष्य, तथा तिरिसठ शलाका पुरुषों का संस्थान समचतुरस्र होता है।

11. किन जीवों में कोई भी संस्थान हो सकता है?

उत्तर. संजी मनुष्य और संजी तिर्यच में कोई भी संस्थान हो सकता है।

पाठ 25

समुद्घात के सात प्रकार हैं-

1. समुद्घात से क्या तात्पर्य हैं?

Ans. सामुहिक रूप से बलपूर्वक आत्मप्रदेशों को शरीर से बाहर निकालना।

2. समुद्घात का अर्थ क्या हैं?

Ans. समुद्घात तीन शब्दों के योग से बना है। सम्, उद् और घात। सम् का अर्थ है एकीभाव, उद् का अर्थ है प्रबलता और घात के दो अर्थ होते हैं- हिंसा करना एवं जाना।

3. समुद्घात की परिभाषा क्या है?

Ans. मूल शरीर को न छोड़कर तैजस और कार्मण शरीर के साथ जीवप्रदेशों का शरीर से बाहर निकालना समुद्घात है।

4. समुद्घात के कितने प्रकार हैं?

Ans. समुद्घात के सात प्रकार हैं।

1. वेदनीय समुद्घात
2. कषाय समुद्घात
3. मारणान्तिक समुद्घात
4. वैक्रिय समुद्घात
5. तैजस समुद्घात
6. आहारक समुद्घात
7. केवली समुद्घात

5. वेदनीय समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. वात, फितरत आदि विकार - जनित रोग या विषपान आदि की तीव्र वेदना से आत्मप्रदेशों का शरीर से बाहर निकलना वेदनीय समुद्घात है।

6. कषाय समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. कषाय की तीव्रता से आत्म प्रदेशों का अपने शरीर से तिगुने प्रमाण में बाहर निकलना कषाय समुद्घात कहते हैं।

7. मारणान्तिक समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. मृत्यु के समय आत्म प्रदेशों का शरीर से बाहर निकल आगामी उत्पत्तिस्थान तक फैलना मारणान्तिक समुद्घात है।

8. वैक्रिय समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. वैक्रिय लब्धि के द्वारा किसी प्रकार की विक्रिया उत्पन्न करने के लिए मूल शरीर का त्याग न कर आत्म प्रदेशों का बाहर जाना और नाना रूपों की विक्रिया करना वैक्रिय समुद्घात है।

9. तैजस समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. किसी व्यक्ति पर अनुग्रह या निग्रह करने के लिए तैजस शरीर का विस्फोट करना तैजस समुद्घात है। इसे तैजोलब्धि भी कहा जाता है।

10. आहारक समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. आहारक लब्धि से संपन्न मुनि अपना संदेह दूर करने के लिए या किसी अन्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए मूल शरीर को छोड़े बिना अपने शरीर से निर्मल स्फटिक के रंग का एक हाथ का पुतला निकालते हैं। वह पुतला जहां कहीं केवली होते हैं वहां पहुंचकर संदेह का निवारण करता है। अपने प्रश्नों

का समाधान पाकर वह पुनः शरीर में प्रवेश कर जाता है वह यह आहारक समुद्घात है। इससे आहारक लब्धि भी कहा जाता है।

11. केवली समुद्घात से क्या तात्पर्य है?

Ans. जब आयुष्य कर्म की स्थिति और दलितों से वेदनीय कर्म की स्थिति और दलित अधिक होते हैं, तब उनका समीकरण करने के लिए केवली समुद्घात होता है। इसमें जीव के प्रदेश दंड, कपाट, मंथन और अंतराल का कर संपूर्ण लोकाकाश का स्पर्श कर लेते हैं।

12. केवली समुद्घात में कितना समय लगता है?

Ans. लोकाकाश स्पर्श प्रक्रिया में केवल चार समय लगता है। अगले चार समयों में क्रमशः आत्म प्रदेश सिमटते हुए पुनः शरीर में स्थित हो जाते हैं।

13. केवली समुद्घात कब होता है?

Ans. यह समुद्घात तब होता है, जब आयुष्य अन्तर्मुहूर्त जितना ही शेष रहता है।।

14. छद्मस्थ और केवली के कितने प्रकार से समुद्घात होता है?

Ans. सात समुद्घातों में प्रथम छह समुद्घात छद्मस्थ के होते हैं और अन्तिम केवली समुद्घात केवलियों के ही होता है।

विशेष नोट:- जिन कर्मों के प्रदेशोदय होता है वह हल्के बंध

जिसके विपाकोदय वह निकाचित कर्म

जिसके प्रदेशोदय और विपाकोदय दोनों हो वह दलित कर्मसंस्थान हो सकता है?